विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान की एक अनुपम भेंट
A Unique Gift For International Unity and Development & Quick Evolution of Human Consciousness

अखण्ड भारत सन्देश

पाक्षिक(Fortnightly) हिन्दी/English

Akhand Bharat Sandesh

REPRINTED DUE TO DEMAND

वर्ष 14 * अंक 15 * विक्रम सम्वत् 2070 * शाके 1935 * आरोही द्वापर युग का 314 वाँ वर्ष * 16&31 ekp,☒2014 * मूल्य :10.00

भारत और अमरीका साथ-साथ

पूरब और पश्चिम का मिलन

Oर्तमान समय में यू0एस0ए0 के राष्ट्रपति बराक ओबामा का उच्च मानवीय विचार और दूरदर्शिता प्रशन्सनीय है । ओसामा बिन लादेन के प्रति उनकी कार्यवाही उनमें छिपे हुए अदृश्य आत्मिक प्रेम को प्रकट करता है । बराक ओबामा सबका भला चाहते हैं और यह भी जानते हैं कि जब कोई व्यक्ति उत्तरोत्तर हिंसक कार्य करता है तो उसे जन्मों–जन्मों तक नर्क भोगना पड़ता है । ओसामा बिन लादेन को नर्क से बचाने के लिए अमरीकी राष्ट्रपति बराक ओबामा ने उपयुक्त निर्णय लिया और उसे अचानक भौतिक जगत से सूक्ष्म जगत में भेज दिया जहाँ पर शीघ्रता से मानव उच्च मानवीय गुणों से मनुष्य विभूषित हो जाता है। ओसामा बिन लादेन जब दुबारा जन्म लेगा तो वह उच्च मानवीय गुणों से विभूषित होगा।

जब मनुष्य भौतिक जगत को छोड़कर सूक्ष्म जगत में जाता है तो वह अल्पकाल में उच्च मानवीय गुणों से संयुक्त हो जाता है । एक

& शेष पृष्ठ 2 ij

Uniting East & West

I appreciate the lifestyle of Barack Obama, the unique president of U.S.A. Barack Obama is truly a great far-sighted and loving person of the world. He has shown his great love for Osama bin Laden. He realised that Osama bin Laden will not be able to do great work in this life and will keep on doing bad work, and because of this will enter and stay in hell many lifetimes. Obama tried his best to change the criminal activities of Osama bin Laden. However, when Obama realised that Osama had become carnivorous, like a man-eating tiger, then, Obama decided that it was best for Osama to leave this physical universe and to get settled in astral world where the great teaching for effective transformation is available. In astral world, one receives the teaching based on Consciousness of Truth and Non-violence and one does not get involved in violent thoughts creating differences among human beings by using ignorant concepts behind cast,

... continued on Page 2

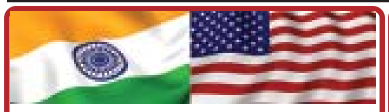

Uniting East & West
India & America
TOGETHER 2

6 - 7
The Five Stages of
Human Consciousness
वर्ण व्यवस्था का
सही रूप....

10 - 11
The Perfect
Education System
क्रियायोग से राष्ट्रीय
परिवर्तन सुनिश्चित

8
विश्व शांति के
लिए विश्व बन्धुत्व...
Universal Brotherhood
for World Peace...

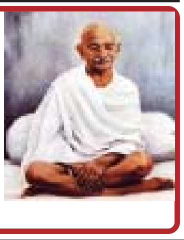

Uniting East & West -
India And America TOGETHER

नवजात शिशु के जीवन को देखिए । वह रंग, जाति, सम्प्रदाय और क्षेत्रीयता से अप्रभावित रहता है। घर, परिवार और समाज के लोग धीरे–धीरे उसे फिर संकीर्ण दायरे में बॉध लेते हैं । सूक्ष्म जगत में मनुष्य अपने अंदर छिपी हुई वैज्ञानिक शक्तियों को अच्छी तरह से अनुभव कर लेता है । जो व्यक्ति प्रसन्नता और भक्ति से क्रियायोग ध्यान करता है उसे भौतिक जगत में ही सूक्ष्म जगत का ज्ञान प्राप्त होने लगता है ।

नोबल पुरस्कार से सुशोभित बराक ओबामा ने पृथ्वी पर शांति स्थापना के लिए इजराइल और फिलिस्तीन के आध्यात्मिक और राजनैतिक दिग्गजों से मुलाकात करके उनसे निवेदन किया कि वे वाशिन्गटन डी0सी0 में जाकर आपस में इस तरह वार्ता शुरू करें कि आपसी लड़ाई–झगड़ा खतम हो जाय । बराक ओबामा ने यह भी सलाह दी कि आपसी मीटिंग का सिलसिला लगातार चलाया जाय और इस कार्य के लिए लगातार 9 महीने तक प्रयत्न किया जाय । बराक ओबामा के अंदर आध्यात्मिकता जागृत होने के कारण ही वे 9 का अंक चुने । संख्या में 9 अन्तिम और सबसे बड़ी संख्या है जिसके बाद और कोई संख्या नहीं है । 9 के बाद 10, 1 व 0 से मिलकर बना है । इस तरह से 9 के बाद की सभी संख्याऐं 0, 1, 2, 3 .... 9 के बीच के सभी अंकों के संयोग से बनती हैं। बराक ओबामा ने भारत के पारलियामेन्ट में उद्घोष किया था कि अमरीका में राष्ट्रपति के पद पर बनने का मुख्य कारण है मैं महात्मा गॉधी के सिद्धान्तों और विचारधाराओं में जीने का प्रयास करता हूँ। अगर मैं ऐसा न करता तो अमरीका का राष्ट्रपति सम्भवतः नहीं बन पाता।

क्रियायोग ध्यान की गहराई में बैठने पर भारत/इंडिया और अमरीका शब्दों में एक ही भाव दिखायी पड़ता है । अन्तरज्ञान से दृष्टि केन्द्रित करने पर 'भारत' शब्द के पीछे छिपा रहस्य प्रकट होता है । 'भा' का अर्थ सम्पूर्ण ज्ञान (ब्रह्मा, विष्णु और शिव का ज्ञान)

– शेष पृष्ठ 3 पर

colour, creed and religion. Osama bin Laden has left earth and is now residing in the astral world, and enjoying peace through the True teaching. All this was done and initiated by great President Barack Obama. We appreciate his decision.

I appreciate Barack Obama because of the great humanitarian work he is doing. His personality reflects great love for humanity, animals, plants and all. I quote the example of how he is working to create unity between Israel and Palestine. He visited Israel and met all their great religious and political leaders. He also went to Palestine and met all their great religious and political leaders. A meeting has also been organized for all of these leaders in Washington D.C. The meeting will be held for the duration of 9 months so that all the leaders can have the opportunity of conversing with each other to resolve all problems and to stop all fight. President Obama is most interested that fight should stop in all countries of the world and that all countries should become rich and great. This is the great lifestyle of Barack Obama. Why did he select 9 months? Barack Obama is charged by intuitive power. He is a spiritual person, therefore he selected the number 9, which ranks topmost in the numerical system. The numerical system starts from 0, followed by 1,2,3,4,5,6,7,8 then 9. After 9, we start again with the number beginning with 1, i.e. 10, 11,12... etc. Therefore, 9 is the top number in the numeric system and represents the complete point. Barack Obama is a great humanitarian and therefore, intuitively, he decided that the talks between Israel and Palestine will be over the period of 9 months. This represents the internal awakening of Barack Obama.

The meetings between Israel and Palestine in Washington D.C. have been proposed so that all problems can be solved and all fighting stopped.

During his speeches in Parliament of Delhi, Obama declared that he became president because his life was guided with the philosophy and principle of Mahatma Gandhi. Due to his spiritual nature, Obama appreciates all the good persons of all countries.

... continued on Page 3

Obama decided that it was best for Osama to leave this physical universe and to get settled in astral world where the great teaching for effective transformation is available. In astral world, one receives the teaching based on Consciousness of Truth and Non-violence and one does not get involved in violent thoughts creating differences among human beings by using ignorant concepts behind cast, colour, creed and religion.

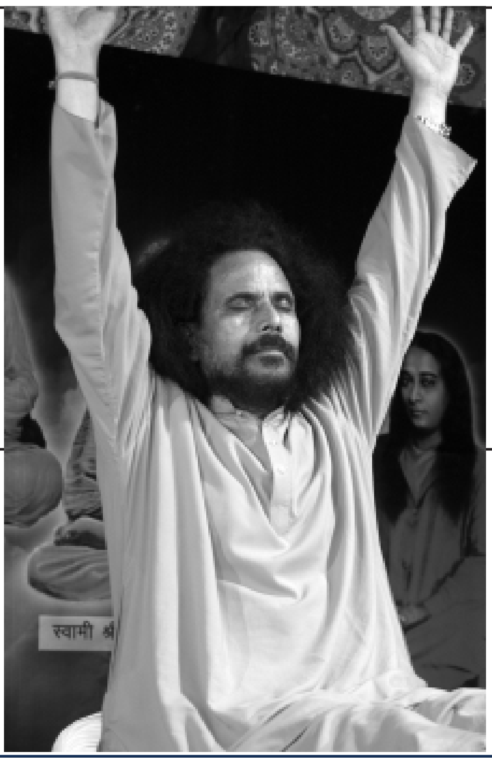

और 'रत' का अभिप्राय जुड़ने से है । वह मनुष्य जो अपने अंदर निहित ब्रह्मा, विष्णु, शिव के ज्ञान से प्रकाशित हो जाता है उसे भारतीय कहते हैं । भारतीयता अमरता के सिद्धान्त को कहते हैं । जिस प्रकार पानी अमर है, पानी का रूप बदला जा सकता है, पानी को दृश्य और अदृश्य किया जा सकता परन्तु उसे मारा नहीं जा सकता है ठीक उसी प्रकार ब्रह्माण्ड की समस्त रचनाएँ अमर हैं । इस सद्भाव और सद्विचार को भारतीयता कहते हैं ।

''इंडिया'' शब्द पर इन्ट्यूटिव दृष्टि डालने पर स्पष्ट होता है कि इंडिया शब्द के पीछे भी वही भाव है । ''इंडिया'' 'इन' ...... और 'डाये' ...... (India = In ...+ Dia ....), यहाँ इन (In) .... का अभिप्राय अन्तःकरण से है तथा डाये (Dia) .... का अभिप्राय डायल करने से है । इंडिया अपने अंदर डायल करने के भाव को प्रकट करता है । जो व्यक्ति अपने अंदर डायल करके सत्य को पा लेता है, वह इंडियन है । ब्रह्माण्ड की प्रत्येक रचनाएँ अमर हैं, यही सच है ।

''अमरीका'' शब्द को इन्ट्यूटिव ज्ञान से देखने पर इसके अंदर निहित सद्भाव और सद्विचार का दर्शन होता है । ''अमरीका'' चार शब्दों के संयोग से बना है – अमर + इ + क + अ । 'अमर' का अभिप्राय 'अमरता', 'इ' का अभिप्राय निकटतम्, 'क' का अभिप्राय करना तथा 'अ' का अभिप्राय ब्रह्मा, विष्णु और शिव। ब्रह्मा, विष्णु, शिव की तरह कार्य करने पर पता चलता है कि निकटतम् स्वरूप अमर है । सिर से पैर की ॲंगुली तक स्वरूप निकटतम् है और यह सनातन है, अमर है । इसका कभी विनाश नहीं होता है । यह कभी दृश्य रूप में और अदृश्य रूप में प्रकट होता है। इस ज्ञान का जिसने अनुभव कर लिया वह अमैरिकन है।

क्रियायोग ध्यान से पूरी तरह स्पष्ट होता है भारत/इंडिया और अमरीका शब्दों के अंदर एक ही सद्भाव है अमरता का अस्तित्व । यही कारण है कि प्रतिवर्ष अमरीका और भारत दोनों एक दूसरे के निकट आ रहे हैं ।

भविष्य में भारत और अमरीका संयुक्त होकर एक ऐसे नये मार्ग का निर्माण करेंगे जिस मार्ग पर सभी राष्ट्र चलकर सत्य व अहिंसा की अनुभूति करेंगे, आपसी लड़ाई–झगड़े बंद होंगे। इस मार्ग पर चलने वाले के अंदर एक ही भाव होगा वसुधैवकुटुम्बकम् और हम सब ईश्वर की संतान हैं।

"India" is made up of two words :
"In" – inside (within) and "Dia" – Dialing. Any person who is able to dial within to find ultimate Truth is called Indian. Ultimate Truth is that each and every creation is Immortal...
When we dissect "America", we get four words: "Amar" - Immortality, "I" – nearest of near existence (Self) , "k" – work and "a" (power of Brahma, Vishnu and Shiva which is nothing but Consciousness of Omnipresent God) . Any person who is able to perform the work of Brahma, Vishnu and Shiva realizes that nearest of near existence (Self) is Immortal.

India and America are intuitively tuned with each other. Every year the friendly relation between the two countries is strengthening. In order to understand this Truth, one has to practice Kriyayoga Meditation to connect with the Consciousness of Truth within the cave of head and spine. The words, "Bharat / India" and "America" have the same hidden meaning. By dissecting the words, "Bharat / India" and "America" with the intuitive scalpel and scissors, we find that both of them have the same idea, thought and concept.

When we dissect "Bharat", we get "bha" (complete knowledge of Brahma, Vishnu and Shiva) and "rat" (to be with that). When we are with complete knowledge of all kinds, then we are called Bharatiya / Indian.

When we dissect "India" with the intuitive scalpel and scissors, then we realise that "India" is made up of two words : "In" – inside (within) and "Dia" – Dialing. Any person who is able to dial within to find ultimate Truth is called Indian. Ultimate Truth is that each and every creation is Immortal.

Now, let us understand the meaning of "America". When we dissect "America", we get four words: "Amar" - Immortality, "I" – nearest of near existence (Self) , "k" – work and "a" (power of Brahma, Vishnu and Shiva which is nothing but Consciousness of Omnipresent God). Any person who is able to perform the work of Brahma, Vishnu and Shiva realizes that nearest of near existence (Self) is Immortal.

By meditating on the words, "India" and "America", we realize that both are connected with the same idea that each and every creation of Cosmos is Immortal. When we practice Kriyayoga Meditation with all devotion and love, we realize that visible existence of Self (head to toes) is Immortal Consciousness. No part of head to toes undergoes process of death like water element. No one can destroy water. Water can be converted into ice, vapour, or hydrogen and oxygen. Water in the form of hydrogen and oxygen is invisible. In the same way, head to toes exists in two forms – visible and invisible. This is exactly what happens with our visible existence – our head to toes. Head to toes is Immortal (*sanatan*), it means that it was present before and will remain up till the end.

When we realize the detailed meaning of America and India, we find that both are one. In the future, America and India will have great unity. Therefore, I bow to the flag of America, and land of America, where Indian Heritage – vegetarianism and Kriyayoga Meditation - is growing very quickly. Kriyayoga Meditation is the top in U.S.A., more than any country of the world. I bow to Bharat / India , great spiritual democratic nation, where the best life philosophy exists that the whole world is one home *(Vasudhaivakutumbakam)*.

'अखण्ड भारत सन्देश' का उद्देश्य

'अखण्ड भारत सन्देश' विश्व के सभी राष्ट्रों को एक सूत्र में जोड़ने के लिए एक अद्वितीय समाचार-पत्र है, जिसका मुख्य लक्ष्य है - मूल सत्य को स्थापित करना। इस समाचार-पत्र की शाब्दिक व्याख्या से मूल सत्य स्वयं प्रकाशित हो जाता है। 'अखण्ड' का आशय है, अविभाज्य और 'भारत' का आशय है 'भा' से रत । भा का अभिप्राय सम्पूर्ण ज्ञान है। भारत ज्ञान युक्तावस्था का संबोधन है जो सदैव अविभाज्य है। जब मनुष्य इस अवस्था में होता है तो उसके द्वारा दिया गया संदेश सदैव सत्य होता है।

इस समाचार-पत्र का उद्देश्य है, पूरे विश्व की ऐसी घटनाओं को प्रकाशित करना जो मानव को मानव से, राष्ट्र को राष्ट्र से, पुरुष को प्रकृति से तथा आत्मा को परमात्मा से जोड़ने में मदद करें। अखण्ड भारत संदेश सनातन भारतीय संस्कृति ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' की भावना का पूरे विश्व में विस्तार करेगा। 'अखण्ड भारत सन्देश' का मुख्य लक्ष्य है, हर मानव को अपने अन्दर स्थित अखण्ड ज्ञान-प्रवाह से परिचित कराना, ताकि समाज को संकीर्णता के दायरे से ऊपर उठाकर विराट विश्व का दर्शन कराया जा सके। इस समाचार-पत्र के विस्तार से समाज के सारे अंग - शिक्षा, चिकित्सा, व्यापार, राजनीति आदि के रूप परिवर्तित होंगे। प्रत्येक देश की शिक्षा व्यवस्था सर्वोच्च स्थान पर होगी, जिसमें शिक्षित व्यक्ति रोजगार की दृष्टि से आत्म-निर्भर होगा। मानव-मानव के बीच एकता व प्रेम का शाश्वत सम्बन्ध स्थापित होगा। एक ऐसे समाज का निर्माण होगा जो भारतीयता, वैज्ञानिकता तथा कर्मठता व आध्यात्मिकता की शाश्वत व संयुक्त शक्ति के जीवन्त रूप को प्रकट करेगा।

पद के लिए संघर्ष राष्ट्रहित के विपरीत

आज आवश्यकता है हम सत् मार्ग का अनुसरण करें। पैगम्बर जिस मार्ग पर चले हैं, उसी मार्ग पर चलना सत् मार्ग का अनुसरण करना है। आज हमारे देश में लोग पद व धन के लिए लड़ते हैं। जिस धरती पर भगवान श्री राम, योगेश्वर श्रीकृष्ण, संत कबीर, नानक देव, प्रभु ईसा, प्रभु मूसा, पैगम्बर महात्मा गाँधी आदि महान विभूतियों ने कभी भी पद व धन के लिए संघर्ष नहीं किया। वहीं पर जो लोग जो पद व धन पाने के लिए लड़ते रहते हैं और एक-दूसरे को मिटाने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। यह परम्परा भारतीयता के विपरीत है। राष्ट्रहित के लिए यह आवश्यक है कि हम पद व धन के लिए मारामारी न करके सच्चे सेवाभाव का विस्तार करें। यह तभी संभव है जब व्यक्ति क्रियायोग ध्यान से जुड जाये।

Akhand Bharat Sandesh
Aim and Objects

Its main objective is to connect all nations together and to bring the realization in the Consciousness of human beings that the whole world is One Home and that all members of the Home are Children of God, fully charged with Omniscient, Omnipotent, Immortal and Omnipresent Consciousness. The name of Akhand Bharat reveals the same meaning. Akhand means undivided. Bharat means oneness with complete knowledge. Complete knowledge is known as Omniscient, Omnipotent, Immortal and Omnipresent Consciousness. Sandesh means message. The message of Akhand Bharat Sandesh will be delivered everywhere in bilingual language (Hindi and English).

Anyone who is charged with the thought that the whole world is One Home and that each and every person of the Home is a child of God, is a perfect person to serve like a Prophet. The nature of child of God is Omniscient, Omnipotent, Immortal and Omnipresent.

It is practically observed that the joyful devoted practice of Kriyayoga Meditation brings the same realization easily and quickly. Akhand Bharat Sandesh will spread this message everywhere and has decided to light the lamp of Kriyayoga Meditation in all homes of the world. The moment this newspaper will reach all persons of the world through the print, electronic and internet media, then heaven on the earth will be observed.

Vasudhaivakutumbakam will be celebrated by the majority of persons. *Vasudhaivakutumbakam* means the whole world is one home. This thought will automatically change all branches of education such as engineering, medical, philosophy, social science etc. Then all places of the world will become rich with all the facilities needed by human beings and thus, become most suitable to live in.

QUALITY OF A TRUE LEADER

True leader is a humble servant of all citizens, charged with principle and philosophy of knowledge, peace and joy-giving ideas, thoughts, and concepts. Any person who is behind money and post cannot be a true leader of the nation. Practically, it is proved that a devoted Kriyayoga Meditator serves human beings and all creations of the nation as a humble servant and is never behind money and post.

A leader who is behind post and money always creates an atmosphere of criminal activities in the name of economic growth which is in actual fact, corrupt economic growth; thus, dividing humanity in the name of religion and always spreading rumours to divide family and society. Through these inhuman and criminal activities, the so-called leaders create a fellowship of their own kind, working to strengthen the power of divide and rule.

A leader should have spiritual love for all where there is no existence of idea, thought and concept of relativity behind any work performed. A leader is able to distribute all things to all persons according to their real need which awakens hidden power, knowledge and peace within their existence. In order to understand the lifestyle of a true leader, one should concentrate on visible existence of Self (head to toes). Observe the behaviour of mouth. The mouth eats all food which is distributed to all parts of body without discrimination. Exactly in the same way, a leader should work for the public and nation.

भारत राष्ट्र के निर्माण से विश्व में सुख-शांति की स्थापना सुनिश्चित

भारत पूरे विश्व की आध्यात्मिक माँ है। जब तक भारत माँ की सम्पूर्ण समस्याएँ नहीं दूर होगी तब तक विश्व में स्थायी सुख-शांति की स्थापना कठिन है। इतिहास पर दृष्टि डालने से स्पष्ट होता है कि भारत देश में जिसको शरण नहीं मिली उसको विश्व में कहीं भी शरण नहीं मिली। एलैग्जेंडर जो विश्व में विजय का पताका फहरा रहा था, जब भारत से हारा तो सदैव के लिए पराजित हो गया। अंग्रेजों का सूर्य जब भारत में अस्त हुआ उसके बाद अंग्रजों का शासन अन्य सभी देशों से हट गया।

भारत से आतंकवाद, सम्प्रदायवाद तथा समस्त सामाजिक कुरूपताएँ समाप्त होने पर पूरी दुनिया से सारी कुरीतियाँ समाप्त हो जाएँगी। भारत राष्ट्र में शिक्षा, चिकित्सा, राजनीति, व्यापार नीति, आदि की समस्त कुरूपताओं को समाप्त करने के लिए आध्यात्मिक पर्यावरण का ठीक होना आवश्यक है। आध्यात्मिक जगत में अनेक प्रकार के गलत सिद्धान्त फैले हुए हैं। उदाहरण के लिए – लोग कहते हैं कि मनुष्य को कुछ करने की आवश्यकता नहीं पड़ती है। उसे सब कुछ सद्गुरु, परमात्मा की कृपा से प्राप्त हो जाएगा। 'कृपा' का अर्थ बिना कुछ करे सब कुछ प्राप्त करने से लगाया जाता है। यह सिद्धान्त गलत है।

'कृपा' के वास्तविक अर्थ को समझने के लिए 'कृपा' शब्द पर ध्यान दें। 'कृपा' शब्द 'कृ' धातु से बना है। 'कृ' का अर्थ करने से है तथा 'पा' 'प' और 'अ' के संयोग के बना है। 'प' का अर्थ प्राप्त करने से है तथा 'अ' का अभिप्राय ब्रह्मा, विष्णु व शिव में विद्यमान शक्ति व ज्ञान से है। कृपा शब्द में छिपे सत्य को पा लेने पर यह स्पष्ट है कि कृपा का अभिप्राय उस कर्म के करने से है जिससे अपने अंदर सुषुप्त ब्रह्मा, विष्णु व शिव का ज्ञान व शक्ति प्रकट हो सके। हर चीज़ कृपा से प्राप्त होती है, इसका वास्तविक अर्थ यह है कि मनुष्य जो कुछ कर्म करता है, उसी के अनुसार उसे हर चीज़ प्राप्त होगी।

आज आवश्यकता है आध्यात्मिक विषय को हम पूर्ण विज्ञान के रूप में समझें और तद्अनुरुप अभ्यास करें। क्रियायोग विज्ञान आध्यात्मिक विज्ञान है और इसका अभ्यास क्रियायोग ध्यान है।

क्रियायोग ध्यान को समझ लेने पर स्पष्ट होता है कि तप, ध्यान, साधना, सुमिरन, भक्ति, आदि भिन्न भिन्न साधनाओं की व्याख्या गलत की जाती है। क्रियायोग का जैसे-जैसे विस्तार होगा मनुष्य बीमारी, चिन्ता, अज्ञानता और सम्पूर्ण कष्टों से सहजता से मुक्त हो जाएगा। इसके साथ ही साथ आध्यात्मिक जगत में फैली हुई विषमताओं का समापन होगा। आध्यात्मिक कुरूपता के समाप्त होने पर समाज के सभी अंग - शिक्षा, चिकित्सा, राजनीति व्यापार नीति आदि इस प्रकार ठीक हो जाएंगे कि उनके द्वारा मानवता की सच्ची सेवा होगी और विश्व का कल्याण होगा।

Secured Peace & Joy of All Countries Resides In Indian Heritage

Lifestyle of Indian heritage is teaching of all prophets of all ages and lands. It gives the message that the aim of each and every person is to realize ultimate Truth and that there exists only Immortal Consciousness. It was taught in various ways in different ages. Now Science has proved Truth behind this teaching. By observing the nature of water substance, it is realized that the external form of water can be changed from solid to liquid to gas. Visible water, through hydrolysis, is transformed into invisible hydrogen and oxygen. The reversal is also possible i.e., hydrogen and oxygen can be synthesized to get water again. Thus, water cannot be destroyed by anyone through any means.

This is true for all creations of Cosmos. Indian Heritage is education which brings realization of the same Truth. It is revealed that through the practice of Kriyayoga Meditation, one can experience Oneness with Consciousness of Indian Heritage. Indian Heritage was known as Cosmic-consciousness in the period of highest evolved human civilization around the period of 11,500 B.C. Cosmic-consciousness means the whole Cosmos is conscious (fully alive). There is no existence of any mortal creation. It clearly explains that there is no dead particle in the Cosmos. Full knowledge of this is known as oneness with complete education. In ancient times, aim of education was the same that each and every person should realize the ultimate Truth that each and every creation of Cosmos is fully conscious and is working in its unique style, guided by Omnipotent, Omniscient Consciousness.

The whole Cosmos is a wonderful Cosmic movie, created by God, which demonstrates duality in walks of life. Every twelve thousand years brings a complete change both externally in the material world and internally in the intellectual world. In a period of twelve thousand years, the understanding of man rises to a highest and decreases to a minimum.

From 11,500 B.C., the intellectual power of man began to diminish. Because of this, intensity of perception of Truth started declining. The period of around 500 A.D. was the darkest period and intellectual power of man was so diminished that it could no longer comprehend beyond the gross material of creation. At this time, the concept of Indian heritage was observed in a limited geographical area well-known as India.

Indian heritage does not mean that something is related to India alone. Actually, Indian heritage refers to the principles and philosophies of Cosmic-consciousness.

Any country, when charged with the principles and philosophy of Indian heritage, will be honoured as Mother India by all countries of the world and will be free from all terrorism and multi-dimensional poverty. Mother India will serve all countries of the world by providing all things which will bring the realization that the whole world is One Home (*Vasudhaivakutumbakam*) and all persons belonging to the Home are children of God.

The Five Stages of Human Consciousness

Kriyayoga Meditation brings realization that human consciousness has five stages of development which are known as Shudra, Dwija, Vipra, Brahmin and Kshatriya.

The Shudra stage is the childhood stage (beginning stage) of human consciousness and in this stage a person is highly attracted towards sense pleasure and believes in mystical phenomena. Such persons can be bribed and distracted very easily. Their understanding power is childlike and limited. They commit mistakes almost in all walks of life and, therefore, they suffer from various physical and mental problems. Because of this, the living expenses of Shudras is very high. Generally, in ancient India, the Shudra stage was up to twelve years of age. With correct teachings, they enter into the Dwija stage and keep on progressing ahead. However, today, due to the lack of proper teaching, the Shudra stage exists even up to later years as well. Sometimes, a person remains in this stage throughout their whole life. Kriyayoga Meditation quickens growth of understanding power and one can proceed very quickly from Shudra stage to the highest stage of Consciousness.

The next stage of development is Dwija Consciousness. In this stage, the understanding power is more evolved and a person is able to realize reality and non-reality behind names and forms of creation. Dwija is made up of two words : "Dwi" means two and "ja" means "knowledge " (gyaana). A person who is in Dwija Consciousness has knowledge of both – sat (reality) and asat (non-reality). Therefore, they commit lesser mistakes in day-to-day life. The living expenses of a Dwija is lesser than that of a Shudra.

The third stage is that of Vipra Consciousness. In this stage, one experiences awakening of Vedic knowledge within. Vedic knowledge is knowledge of creation, preservation and change. A person in this stage is a scientist in all dimensions of life. They are giver of light to all persons suffering from various problems. They live a good and balanced life and do not have sufferings like persons of Dwija and Shudra stages. Their living expenses are very much less in compared to Dwija persons.

Brahmin Consciousness is the fourth stage of human consciousness. Persons of this stage are highly evolved and have perfect knowledge of creation, preservation and change. They are known as Brahmins. The expenses of Brahmins are minimal. Among Brahmins, few attain the ultimate stage of evolution and represent Vishnu Consciousness. They are called Kshatriayas. The word "Kshatriya" is comprised of two words – "Kshet" which means injuries and "traan" which means cure. Because of awakened Vishnu Consciousness within, Kshatriyas are able to solve all problems of all creations and are able to bring any change according to need. They are also known as Prophets.

THE REAL CONSTITUTION

Constitution of a nation is the principle, philosophy, rules and regulations practised by highest evolved creation of this earth. When we observe, the highest evolved creation is the human being because of the special unique position of the head and spine – head facing upward, spine below.

The lifestyle of human being should have all principles, philosophical rules and regulations to maintain existence, consciousness and bliss of self and other creations of the universe.

Each and every activity of a human being should fill existence of self and others with power, knowledge, peace and joy. **Practically it is observed that continuous concentration on the Bhrumadhya and Divine Cave brings this same effect within human beings of this earth.**

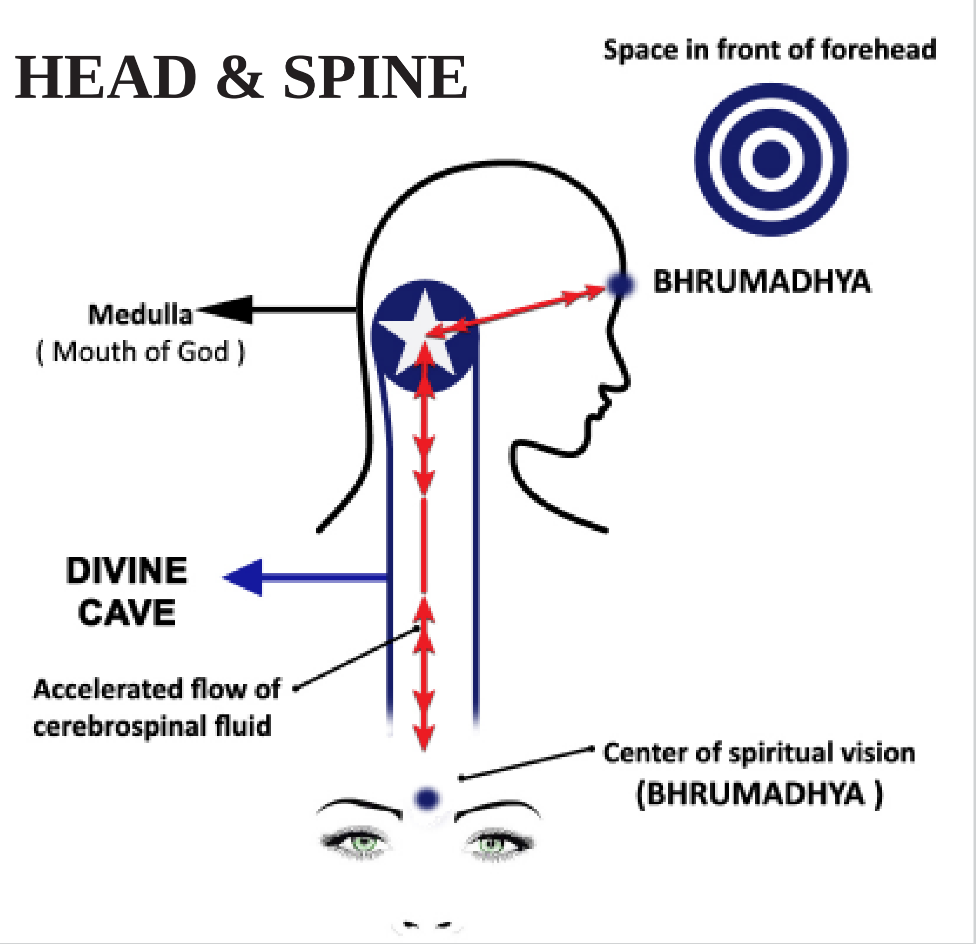

वर्ण व्यवस्था का सही रूप....

क्रियायोग सत्संग का संक्षिप्त अंश

''**क्रि**यायोग प्राचीनतम् आध्यात्मिक शिक्षा है। इसी शिक्षा को प्राचीनकाल में उपनयन संस्कार कहा जाता था। उपनयन संस्कार को बारह वर्ष के बाद ग्रहण करने का विधान है। बारह वर्ष के पहले हर व्यक्ति शूद्र होता है। शास्त्रों में कहा गया है - 'जन्मतो जायतो शूद्र:'। जन्म से सभी शूद्र होते हैं। यहाँ पर शूद्र का अर्थ जाति से नहीं है। वे सारे व्यक्ति जिनका जीवन खाने-पीने, घूमने-टहलने और इन्द्रिय सुख-भोग में केन्द्रित होता है, सभी शूद्र की तरह हैं।

प्रारम्भिक जीवन में मस्तिष्क तथा अन्त:श्रावी ग्रन्थियों आदि के विकास के लिए शूद्र प्रवृत्ति का होना आवश्यक है। अगर बच्चों के हँसने, खेलने, घूमने की उन्मुक्तता को रोक दिया जाय तो उनका विकास रुक जाएगा। इसलिए प्राचीनकाल में बारह वर्ष तक किसी भी प्रकार की बाह्य शिक्षा को ग्रहण करने का विधान नहीं था। बारह वर्ष के बाद उपनयन संस्कार ग्रहण करने पर मनुष्य शूद्र से द्विज में रूपान्तरित हो जाता था।''

द्विज का अर्थ मनुष्य की उस अवस्था से है जब उसे सत् और असत् के बारे में ज्ञान हो जाता है। सत् असत् के बारे में ज्ञान प्राप्त होने पर सतमार्ग का अनुसरण करने पर मनुष्य वैदिक ज्ञान की प्राप्ति कर लेता है। सत, रज, तम गुणों से संबंधित ज्ञान ही वैदिक ज्ञान है। सत, रज, तम गुणों के भिन्न-भिन्न अनुपात से पत्थर, वनस्पति, जीव-जन्तु, मानव व देवी-देवता आदि का निर्माण हुआ है। अत: अणु-परमाणु, वनस्पति, जीव-जन्तु, मानव व देवी-देवता के बारे में ज्ञान प्राप्त करना ही वैदिक ज्ञान है। वैदिक ज्ञान की प्राप्ति होने पर मनुष्य विप्र अवस्था की प्राप्ति कर लेता है। विप्र से वैश्य और ब्राह्मण दो शाखाएँ प्रकट हुई। जो लोग वेदों का ज्ञान प्राप्त करके व्यापार आदि के द्वारा समाज की सेवा करने लगे, उन्हें वैश्य कहा गया। इसके अलावा अन्य लोग जो उपनयन संस्कार की विद्या का और अभ्यास करके ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति कर लिए, उन्हें ब्राह्मण कहा गया।

ब्राह्मणों का वह वर्ग जो उपनयन संस्कार के गहन अभ्यास द्वारा शरीर के अन्दर विद्यमान चक्रों पर अधिकार प्राप्त कर लिये, उन्हें चक्रवर्ती राजा कहा गया। इन्हीं लोगों को क्षत्रिय व राजर्षि भी कहा गया है। क्षत्रिय का अर्थ है जो क्षत अर्थात् कष्ट का त्राण करे। जो अपने ज्ञान व शक्ति के द्वारा जनता के कष्टों को दूर करता था, उसे क्षत्रिय समाज कहा गया।

शास्त्रों में भी कहा गया है कि ब्राह्मण लोगों ने क्षत्रियों का निर्माण किया। इसका अर्थ यह है कि ब्राह्मण अवस्था की प्राप्ति के बाद और गहन साधना के द्वारा क्षत्रिय अवस्था की प्राप्ति होती है। इस प्रकार शूद्र, द्विज, विप्र, ब्राह्मण आदि अवस्थाएँ अलग-अलग डिग्री की तरह थी जो मनुष्य की साधना और उसके अन्त:करण में प्रकाशित ज्ञान के आधार पर, उसे प्रदान की जाती थीं। कलिकाल में मानव मस्तिष्क का ज्ञान घटने पर जब लोग जन्म को कर्म से बड़ा मानने लगे तो जन्मना जाति प्रथा की परम्परा चल पड़ी।

भारत राष्ट्र के निर्माण के लिए आज आवश्यकता है कि जाति व्यवस्था का सही रूप प्रकट हो और हमारे देश से जातिवाद का झगड़ा समाप्त हो जाय। क्रियायोग का विस्तार होने पर जनता ज्ञानी होगी। ऐसा होने पर स्वत: कर्म को जन्म से बड़ा माना जाएगा और कर्म की महत्ता स्थापित होगी। ऐसी स्थिति में जाति व्यवस्था का सही रूप प्रकट होगा।

क्रियायोग का अभ्यास करने पर मनुष्य शूद्र से द्विज, द्विज से विप्र, विप्र से ब्राह्मण और क्षत्रिय अवस्था की प्राप्ति कर अल्पकाल में पूर्ण विकसित और ज्ञानी हो जाता है। ऐसा होने पर उसके द्वारा देश की और मानवता की सच्ची सेवा होगी और राष्ट्र का उत्थान होगा।

शास्त्रों में कहा गया है जन्मतो जायतो शूद्र: - जन्म से सभी शूद्र होते हैं। उपनयन संस्कार ग्रहण करने पर मनुष्य शूद्र से द्विज हो जाता है। उपनयन संस्कार को क्रियायोग का अभ्यास कहा गया है। क्रियायोग के अभ्यास से द्विज अवस्था के प्रकट होने पर मनुष्य सत् और असत् के बारे में वास्तविक ज्ञान की प्राप्ति कर लेता है। सत् मार्ग का अनुसरण करने पर मनुष्य वैदिक ज्ञान की प्राप्ति कर लेता है। वैदिक ज्ञान की प्राप्ति होने पर मनुष्य विप्र हो जाता है। विप्र से दो शाखाएँ प्रकट हुई - जो लोग वैदिक ज्ञान के प्रयोग से व्यापार आदि करने लगे उन्हें वैश्य कहा गया। जो लोग उपनयन संस्कार की विद्या का और अभ्यास करके ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति कर लिए उन्हें ब्राह्मण कहा गया। ब्राह्मणों का वह वर्ग जो ध्यान करके अपने चक्रों पर अधिकार प्राप्त कर लिया उन्हें चक्रवर्ती राजा कहा गया। इन्हीं लोगों को क्षत्रिय कहा गया है। क्षत्रिय का अर्थ है जो क्षत् (कष्ट) का त्राण करे अर्थात् जो अपने शक्ति और ज्ञान के द्वारा लोगों के कष्टों को दूर करता था, उन्हें क्षत्रिय समाज कहा गया।

नई व्यवस्था को विकसित करने के लिए आवश्यक बिन्दु

1– fdसी भी राष्ट्र का संविधान राष्ट्र में सबसे अधिक विकसित रचना के द्वारा क्रियान्वित व संपोषित किया जाता है और यह ध्यान रखा जाता है कि राष्ट्र की सभी रचनाओं का अस्तित्व निरन्तर ज्ञान व परमानन्द से उत्तरोत्तर समृद्धि को प्राप्त होता रहे । विश्व के सभी रचनाओं में मानव श्रेष्ठतम् रचना है । यह इसलिए है क्योंकि मानव स्वरूप में सिर ऊपर व रीढ़ नीचे है। मनुष्य के द्वारा प्रत्येक क्रियाकलाप से यह सुनिश्चित होना चाहिए कि उसके रहन–सहन से उसका और अन्य सभी रचनाओं में उत्तरोत्तर शक्ति, ज्ञान, शांति व आनन्द की बढ़ोत्तरी होती रहे । विभिन्न प्रयोगों से यह सिद्ध हो गया है कि जब मनुष्य की एकाग्रता निरन्तर भूमध्य और दिव्य गुफा की ओर बढ़ती जाय तो उपरोक्त सभी लक्ष्य आसानी से पूरे हो जाते हैं।

2– अब यह स्पष्ट है कि संविधान की नियमावली केवल मनुष्य के पालन करने के लिए है । मनुष्य में विकास की चार अवस्थाऐं होती हैं और उन्हीं चार अवस्थाओं के विकास को सुनिश्चित करने के लिए संविधान होता है । मनुष्य में विकास की चार अवस्थाओं को शूद्र, द्विज, विप्र व ब्राह्मण के रूप में जाना जाता है । रहन–सहन में सबसे अधिक राष्ट्रीय सम्पदा व धन का उपयोग शूद्र अवस्था में मानव के लिए और सबसे कम ब्राह्मण अवस्था में। संविधान की सभी नियमावली इसी के अनुरूप होनी चाहिए ।

3– मानव की शूद्रावस्था सामान्यतया बारह वर्ष की उम्र तक होती है । नवजात शिशु से बारह वर्ष की उम्र तक खाने, पीने आदि रहन–सहन में अधिक धन का उपयोग होता है । बारह वर्ष के उम्र तक की शिक्षा पूरे जीवन की आधारशिला होती है । इसी समय बच्चों में नीव डालनी होती है कि कैसे वे जीवन को निरन्तर ज्ञान, शांति, शक्ति व परमानन्द की ओर उत्तरोत्तर बढ़ाते चलें । वर्तमान में यह व्यवस्था नहीं है ।

4– बारह वर्ष के बाद बच्चा सही और गलत को समझते हुए सच की तरफ बढ़ने का प्रयत्न करता है । इस समय शिक्षा प्रणाली सत्य व अहिंसा के सिद्धान्तों व प्रयोगों से संतृप्त होना चाहिए जिससे वह बालक उत्तरोत्तर शांति, शक्ति, ज्ञान और परमानन्द की ओर आगे बढ़ता रहे ।

5– द्विज अवस्था को अच्छी तरह से जी लेने पर वही बालक विप्र अवस्था में पहुँचता है । विप्र अवस्था में मनुष्य के अन्तःकरण में सत्य व अहिंसा की ओर बढ़ने के लिए सारी नियमावली प्रकट हो जाती है और उस पर चलने के लिए उत्तरोत्तर धैर्य और उत्साह की वृद्धि होती रहती है । विप्र अवस्था में मनुष्य के अंदर सृजन, संरक्षण व परिवर्तन से संबंधित सभी प्रकार के नियम और उसको क्रियान्वित करने के लिए प्रयोग विधि प्रकाशित हो जाती है । उसका अन्तःकरण और चतुर्दिक वातावरण आध्यात्मिकता से संतृप्त वैज्ञानिक आभामण्डल के रूप में प्रकाशित हो जाता है ।

6– विप्र अवस्था से विभूषित मनुष्यों में से कुछ लोग राष्ट्र में विविध प्रकार के कर्मो को संपादित करते हैं । उनके द्वारा किये गये सभी कर्मो से राष्ट्र में आध्यात्मिकता से ओत प्रोत वैज्ञानिक वातावरण बनता है जिससे मानव, जीव जन्तु, पेड़–पौधे, पहाड़, समुद्र, नदियॉ आदि का उपयुक्त संरक्षण प्राप्त होता है । विप्र अवस्था में स्थित मनुष्य जब अन्य कर्मो में न लगकर अपनी अग्रिम आध्यात्मिक ऊँचाई को प्राप्त करने का प्रयत्न करता है तो वह ब्रह्मणत्व अवस्था की ओर आगे बढ़ता है। आवश्यक विद्यार्जन के उपरान्त उसे ब्रह्म विद्या का पूर्ण ज्ञान प्राप्त हो जाता है और इस समय वह ब्राह्मण कहा जाता है ।

7– ब्राह्मणों में वे सभी जो अपने अंदर छिपी विष्णु शक्ति को जागृत कर लेते हैं, क्षत्रिय कहा जाता है। इनके पास सम्पूर्ण शक्ति व ज्ञान रहता है जिससे वह सभी को कष्ट से मुक्त कर सकते हैं। ''क्षत्रिय'' शब्द 'क्षत्' व 'त्राण' से मिलकर बना है। 'क्षत्' का अर्थ विविध प्रकार का कष्ट तथा 'त्राण' का अर्थ दूर करना। जो सभी प्रकार के कष्टों को दूर कर ले वही क्षत्रिय है। सभी प्रकार के कष्टों को दूर करने के लिए अन्तःकरण में विष्णु शक्ति का जागरण आवश्यक है। क्रियायोग ध्यान से विष्णु की शक्ति शीघ्रता से जागृत हो जाती है। भगवान श्री राम, भगवान श्रीकृष्ण, गौतम बुद्ध, महावीर स्वामी, 24 तीर्थकर, श्री परमहंस योगानन्द आदि क्षत्रिय कहे जाते हैं क्योंकि उनके अंदर विष्णु की शक्ति जागृत हो गया थी।

विश्व शांति के लिए युद्ध के स्थान पर विश्व बन्धुत्व की भावना का विस्तार आवश्यक

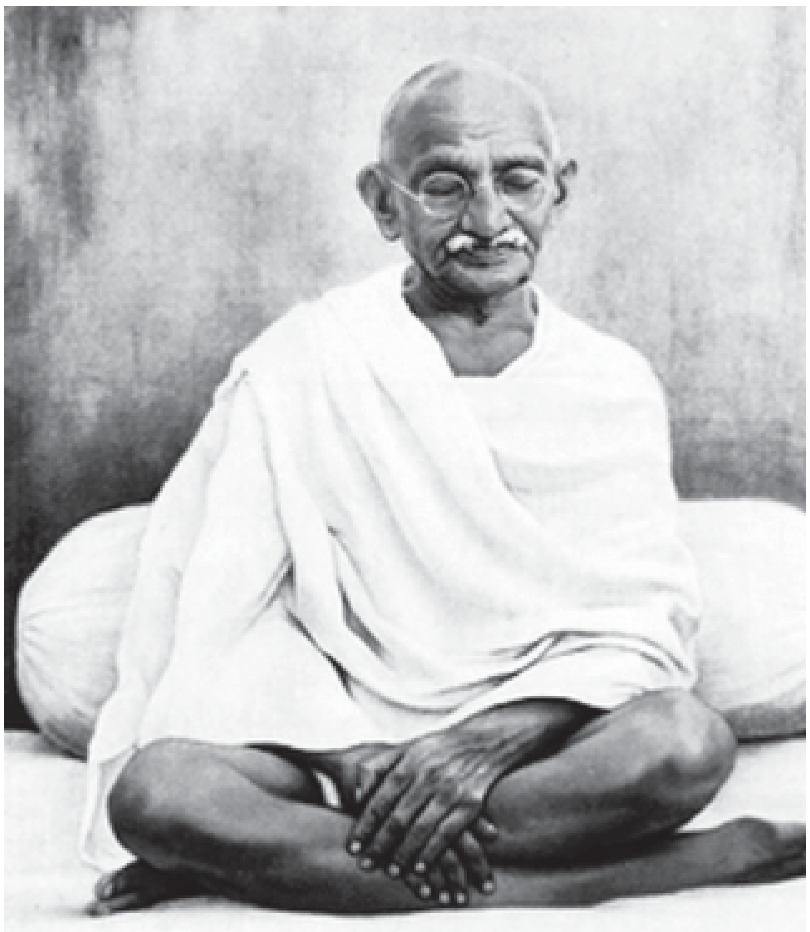

क्रियायोग के गहन ध्यान में लीन महात्मा गाँधी

‘‘महात्मा गाँधी प्रतिदिन क्रियायोग का अभ्यास करते थे। उनके गुरु श्री परमहंस योगानन्द जी थे जिन्होंने वर्धा आश्रम में महात्मा गाँधी जी को क्रियायोग की दीक्षा दी थी।’’

मैं देखता हूँ कि ध्वंस के बीच में जीवन विद्यमान है। इसलिए ध्वंस से भी बड़ा कोई विधान अवश्य है। केवल उस विधान के अन्तर्गत ही सुव्यवस्थित समाज का अस्तित्व संभव हो सकता है और जीवन जीने योग्य बन सकता है।

‘‘यदि यही जीवन का विधान है, तो अपने दैनिक जीवन में हमें उसका पालन करना चाहिए। जहाँ कहीं युद्ध हो, जहाँ कहीं किसी विरोधी पक्ष से सामना हो, हमें प्रेम से ही उस पर विजय प्राप्त करनी चाहिए। मैंने देखा है कि प्रेम के विधान ने मेरे जीवन में अनेक प्रश्नों का समाधान किया है, जो ध्वंस के विधान से कभी नहीं हो पाया है।’’

इतिहास इस बात का साक्षी है कि मनुष्य की समस्याएँ पाशविक शक्ति के प्रयोग से हल नहीं हुई है। प्रथम विश्वयुद्ध के रोमांचकारी भयानक कर्मफल के रूप में ही द्वितीय विश्वयुद्ध ने जन्म लिया। केवल विश्व बंधुत्व-भाव की उष्णता ही द्वितीय विश्व युद्ध के भयानक कर्मफल के हिमखंड को पिघला सकती है, अन्यथा सम्भव है कि उससे तृतीय विश्वयुद्ध का जन्म हो। बीसवीं सदी की अमंगलत्रयी विवादों के निबटारे के लिए मानवी विवेक के बदले जंगली उपायों के अवलंबन से तो पृथ्वी जंगल बन कर रह जायेगी। यदि जीवन में भाईचारा स्थापित नहीं हो सका, तो भयानक मृत्यु की गोद में भाईचारा होगा। ईश्वर ने प्रेमपूर्वक मनुष्य को अणु शक्ति के आविष्कार की जो प्रेरणी दी है, वह इस प्रकार के घृणित व्यवहार के लिए नहीं!

युद्ध और अपराध कभी लाभप्रद नहीं होते। अरबों डालर विस्फोटक पदार्थों का धुआँ बन कर शून्य में मिल जाता है। इस धनराशि से तो रोग और दारिद्र्य से पूर्णतः मुक्त एक नये विश्व का ही निर्माण हो सकता था। भय, अराजकता, अकाल और महामारी आदि के प्रलय नृत्यों का रंगमंच न बन कर पृथ्वी शान्ति, समृद्धि और ज्ञान-प्रसार का विस्तीर्ण क्षेत्र बन जाती।

गाँधी जी की अहिंसा की पुकार मनुष्य की सर्वोच्च चेतना का स्पर्श करती है। आज राष्ट्रों को मृत्यु के साथ नहीं वरन् जीवन के साथ, विध्वंस के साथ नहीं वरन् निर्माण के साथ, घृणा के साथ नहीं किन्तु प्रेम के सर्जनात्मक चमत्कारों के साथ सम्बन्ध स्थापित करना चाहिए। ☙

- योगी कथामृत

Importance of Universal Brotherhood Necessary for World Peace

“ I have found that life persists in the midst of destruction. Therefore there must be a higher law than that of destruction. Only under that law would well-ordered society be intelligible and life worth living.”

If that is the law of life we must work it out in daily existence. Wherever there are wars, wherever we are confronted with an opponent, conquer by love. I have found that the certain law of love has answered in my own life as the law of destruction has never done.”

“ War and crime never pay. The billions of dollars that went up in the smoke of explosive nothingness would have been sufficient to have made a new world, one almost free from disease and completely free from poverty. Not an earth of fear, chaos, famine, pestilence, the *danse macabre,* but one broad land of peace, of prosperity, and of widening knowledge.”

The nonviolent voice of Gandhi appeals to man’s highest conscience. Let nations ally themselves no longer with death, but with life; not with destruction, but with construction; not with the Annihilator, but with the Creator.

Nonviolence is the natural outgrowth of the law of forgiveness and love. “If loss of life becomes necessary in a righteous battle,” Gandhi proclaims, “one should be prepared, like Jesus, to shed his own, not others’, blood. Eventually there will be less blood spilt in the world.”

“ I call myself a nationalist, but my nationalism is as broad as the universe. It includes in its sweep all the nations of the earth. My nationalism includes the well-being of the whole world. I do not want my India to rise on the ashes of other nations. I do not want India to exploit a single human being. I want India to be strong in order that she can infect the other nations also with her strength. Not so with a single nation in Europe today; they do not give strength to the others.” ☙

- Gandhiji’s thoughts and quotations as given in Autobiography of a Yogi by Paramahansa Yogananda

Training Of The Spirit

The Story Of My Experiments with Truth

"Real Education Teaches To Love Each Other..."

by Mahatma Gandhi

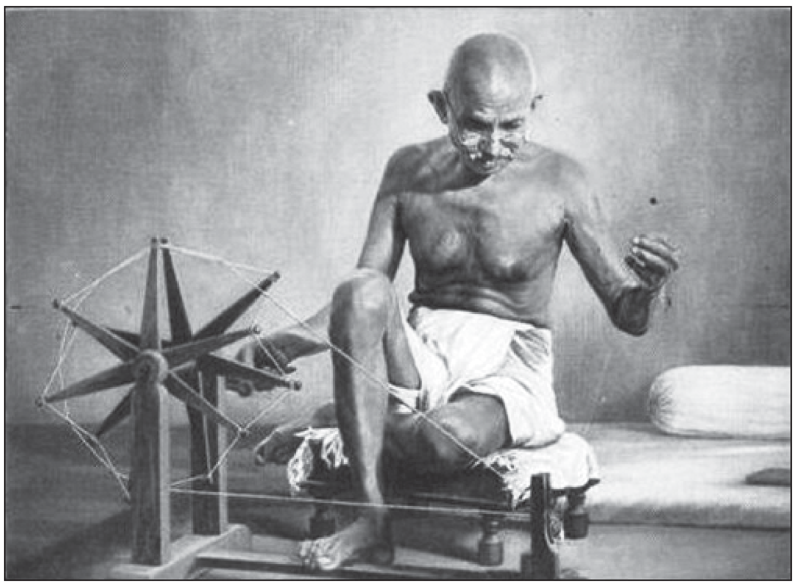

Spiritual Training is a much more difficult matter than physical and mental training. I relied little on religious books for the training of the spirit. Of course, I believed that every student should be acquainted with the elements of his own religion and have a general knowledge of his own scriptures and therefore I provided for such knowledge as best as I could: But that, to my mind, was part of the intellectual training…

To develop the spirit is to build character and to enable one to work towards a knowledge of God and self-realization. And I held that this was an essential part of the training of the young, and that all training without culture of the spirit was of no use, and might even be harmful.

I am familiar with the superstition that self-realization is possible only in the fourth stage of life i.e. *sannyasa* (renunciation). But it is a matter of common knowledge that those who defer preparation for this invaluable experience until the last stage of life attain not self-realization but old age amounting to a second and pitiable childhood, living as a burden on this earth…

As I came into closer contact with the students I was training, I saw that it was not through books that one could impart the training of the spirit. Just as physical training was to be imparted through physical exercise, and intellectual through intellectual exercise, even so the training of the spirit was possible only through the exercise of the spirit. And the exercise of the spirit entirely depended on the life and character of the teacher…

It is possible for a teacher situated miles away to affect the spirit of the pupils by his way of living. It would be idle for me, is I were a liar, to teach boys to tell the truth. A cowardly teacher would never succeed in making his boys valiant, and a stranger to self-restraint I saw could never teach his pupils the value of self-restraint.

To develop the spirit is to build character and to enable one to work towards a knowledge of God and self-realization. And I held that this was an essential part of the training of the young, and that all training without culture of the spirit was of no use, and might even be harmful.

Kriyayoga is an Omnipotent Tool to Solve All Problems

Kriyayoga Kumbha Mela News

Without perfect discipline a person cannot realize his Eternal nature. Perfect discipline means using Intuition for the operation and function of the twenty-four elements, which are known as twenty-four elders. Intuition should guide and control Chitta (power of limited perception), Ahamkara (Ego), Buddhi (reasoning power), mind, senses and all of the remaining elements, which comprise the twenty-four elements of creation. Through the practice of Kriyayoga meditation intuition-guided discipline is achieved in a short span of time (within 100 years). The same state is created in one million years of diseaseless life journey.

Kriyayoga practice reduces this big time span to an exceptionally short period of time. Fifty minutes of Kriyayoga practice covers one hundred years of regular life journey. This was explained by international spiritual leader, Swami Shree Yogi Satyam to pilgrims attending the Kriyayoga Camp in Mukti Marg in Kumbha Mela.

Swamiji further said that the cause of all mental, physical and spiritual sickness is blind activity of the mind and reasoning power guided by Ego and supported by habit and dual concept.

Kriyayoga Meditation is the perfect, scientific teaching which is able to remove all kinds of problems such as fear, ignorance and illnesses of many kinds. Describing the various periods of time related to the Yugas, Swami Satyam further explained that the teaching and expansion of Kriyayoga is possible because of Ascending Dwarpar Yuga. The majority of people are able to grasp the true ideas, thoughts and concepts behind names and forms within the existing Cosmos. Kriyayoga Meditation is the perfect solution to all problems of life and is available to all but can be practiced only by those who have one-pointed devotion in learning and practicing Kriyayoga Meditation.

Perfect Education System

Perfect Education is the system of learning for transformation of Shudra Consciousness into higher Consciousness according to personal desire. This kind of education system removes all fight and suffering within and around. Kriyayoga Science is the light to enlighten present system of education to make great change within to fulfill dreams and desires of all persons of the world.

Present system of education is imperfect. Because of this, there is tension and stress in all departments of national activities like medical, engineering, business, agricultural and political etc. The present system has become congested and there is tremendous suffocation.

In order to understand this clearly, observe a chicken embryo growing inside of an egg. In the beginning, the embryo experiences vast space. When the same embryo attains its full-size, it feels great suffocation and stress. Because of this, the embryo makes stressful cracking noises. After hearing these cracking noises, the mother hen breaks the shell of the egg and frees the chick from its suffocating limited egg-space to the vast open space.

At present, human consciousness is much more evolved and feeling great suffocation because of the existing systems of different rules and regulations of the government, administration and judiciary. All problems of human beings, animals and plants, mountains, lakes and rivers are because of the existing systems of the nation. Kriyayoga education is like a mother hen, which breaks the shell of ignorance, and opens the atmosphere of Infinite dimensions charged with Bliss, Omniscient, Omnipotent and Omnipresent Consciousness. Then, all systems of the nation will change automatically to bring peace and joy in each and every person.

Kriyayoga Science is the light to enlighten present system of education to make great change within to fulfill dreams and desires of all persons of the world.

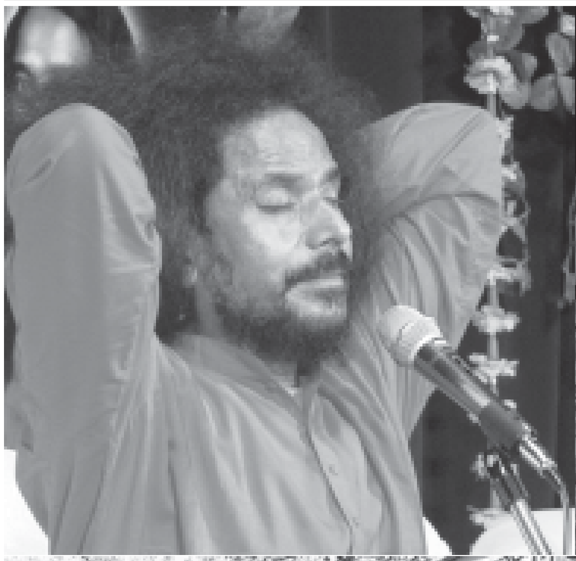

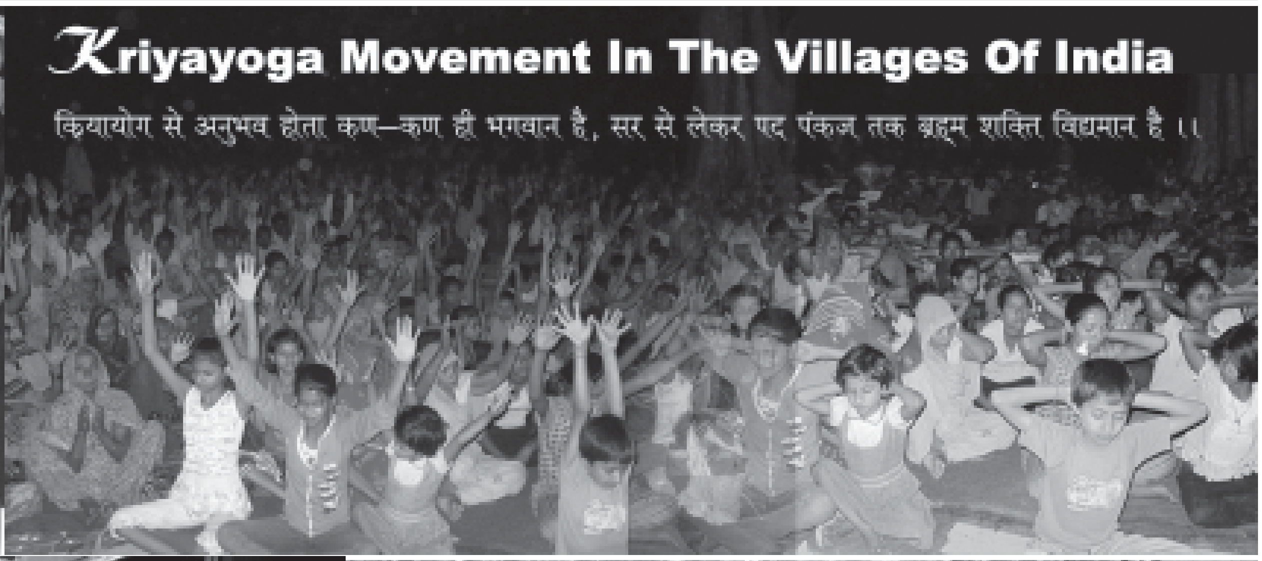

The Media Bus & Village Bus For Service In Villages...

Speaking with the villagers

Kriyayoga In The Schools

क्रियायोग से राष्ट्रीय परिवर्तन सुनिश्चित

प्राय: लोग कहते हैं कि समाज में चारों तरफ अव्यवस्था बढ़ रही है। शिक्षा नीति अपंग हो गयी है जिसके कारण हर शिक्षित व्यक्ति नौकरी की तलाश करता है। नौकरी न मिलने पर वह बेरोजगारी का शिकार होता है। चिकित्सा विज्ञान में दवाएँ बढ़ती जा रही हैं, चिकित्सक बढ़ते जा रहे हैं और मरीजों की संख्या भी बढ़ती जा रही है। दवाएँ बीमारियों का पूर्णतया निदान करने में सक्षम नहीं है। एक दवा को खाने से जहाँ एक रोग दूर होता है वहीं पर उसके साइडइफेक्ट से अनेक नयी बीमारियाँ प्रकट होने लगती हैं। न्यायालय में न्याय व्यवस्था ठीक नहीं है। आजकल सामान्यतया न्याय उसी को मिल पाता है जिसका संबंधित वकील और जज से परिचय हो। इस तरह से न्याय परिचयवाद पर आधारित हो गया है। भारतवर्ष की अधिकांश जनता के पास इतना धन नहीं है कि वह न्याय की गुहार के लिए हाईकोर्ट और सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटा सके। इसके अतिरिक्त हाईकोर्ट, सुप्रीम कोर्ट से न्याय मिलेगा, यह भी सुनिश्चित नहीं रहता है। ऐसी अवस्था में न्याय न मिल पाने के कारण जनता हारकर मौन हो जाती है।

इसी प्रकार समाज के अन्य अंग राजनीति, व्यापार नीति, सामाजिक नीति आदि भी मानवता की सच्ची सेवा करने में पूर्णतया सक्षम नहीं हैं। आइए! कारण व निवारण पर विचार करें... आप मुर्गी के अंडे की कल्पना करें। मुर्गी के अंडे के अंदर चुज्जा रहता है। प्रारम्भ में चुज्जे को लगता है कि मुर्गी का अंडा बहुत बड़ा संसार है। धीरे-धीरे चुज्जा बड़ा होने लगता है। बढ़ते-बढ़ते चुज्जा जब अंडे में सकस जाता है तो उसे वही अंडा बहुत छोटा लगता है और वह चूँ-चूँ की आवाज करता है। इतने में मुर्गी माँ आती है और अंडे के शेल को तोड़ देती है। चुज्जा अंडे से बाहर निकलता है और खुशी के साथ खुले वातावरण को पाकर दौडने लगता है। इस समय चुज्जा व्यापकता की अनुभूति करता है। ठीक इसी प्रकार शिक्षा नीति, चिकित्सा नीति, व्यापार नीति, न्याय व्यवस्था आदि मुर्गी के अंडे की तरह हैं। हम सभी लोग चुज्जे की तरह हैं और वर्तमान व्यवस्था में ससक गये हैंऔर चूँ-चूँ कर रहे हैं। आज छोटे-छोटे बच्चे भी कहते हैं कि उनको मानसिक तनाव है। हर व्यक्ति परिवार, समाज अथवा स्वयं की परिस्थितियों से परेशान दिखता है। यह मनुष्य के विकास का लक्षण है। आज आवश्यकता है कि हम शिक्षा, चिकित्सा, राजनीति आदि के शेल (संकीर्ण दायरे) को तोड़कर बाहर निकलें और असीमता के साम्राज्य में प्रवेश करें।

क्रियायोग उस माँ की तरह है जो शिक्षा, चिकित्सा, राजनीति आदि के शेल अर्थात् संकीर्ण दायरे को तोड़कर असीमता का वातावरण प्रदान करती है।

निवारण - क्रियायोग के विस्तार से मानव की पूरी जीवन पद्धति बदल जायेगी। विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका व्यवस्थित हो जायेगी और सभी लोग सुख और शांति से जीवन व्यतीत करेंगे।

आप मुर्गी के अंडे की कल्पना करें। मुर्गी के अंडे के अंदर चुज्जा रहता है। धीरे-धीरे चुज्जा बड़ा होने लगता है। बढ़ते-बढ़ते चुज्जा जब अंडे में सकस जाता है तो उसे वही अंडा बहुत छोटा लगता है और वह चूँ-चूँ की आवाज करता है। इतने में माँ आती है और अंडे के शेल को तोड़ देती है। चुज्जा अंडे से बाहर निकलता है और अनन्त ब्रह्माण्ड की अनुभूति करता है। ठीक इसी प्रकार शिक्षा नीति, चिकित्सा नीति, व्यापार नीति, न्याय व्यवस्था आदि मुर्गी के अंडे की तरह हैं। हम सभी लोग चुज्जे की तरह हैं। हम शिक्षा, चिकित्सा आदि के संकीर्ण दायरे में सकस गए हैं और चूँ-चूँ कर रहे हैं। क्रियायोग उस माँ की तरह है जो शिक्षा, चिकित्सा, राजनीति आदि के शेल अर्थात् संकीर्ण दायरे को तोड़कर असीमता का वातावरण प्रदान करती है।

Yogavatar Shree Shree Lahiri Mahasaya

" Always remember that you belong to no one, and no one belongs to you. Reflect that some day you will suddenly have to leave everything in this world, so make the acquaintanceship of God now. "

" Prepare yourself for the coming astral journey of death by daily riding in the balloon of God-perception. Through delusion you are perceiving yourself as a bundle of flesh and bones, which at best is a nest of troubles. "

" Meditate unceasingly, that you may quickly behold yourself as the Infinite Essence, free from every form of misery. Cease being a prisoner of the body; using the secret key of Kriya, learn to escape into Spirit. "

Yogavatar Shree Shree Lahiri Mahasaya

About The Great Guru

Shree Shree Lahiri Mahasaya is the Yogavatar of present Ascending Dwapar Yuga (1700 A.D. to 4100 A.D.). In 1861, Mahavatar Babaji fully awakened the Intuitive Eye of Lahiri Mahasaya and requested him to spread the teaching of complete lifestyle (Life Science) – Kriyayoga Science to everyone so that they may realize their Omnipresent, Omnipotent and Omniscient nature.

As the Holy Ganges came down from heaven to Earth through the deep practice of Kriyayoga by Sage Bhageerath, so in 1861, the celestial holy river of Kriyayoga descended to Earth through the instrumentality of Shree Shree Lahiri Mahasaya.

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादकः स्वामी श्री योगी सत्यम् द्वारा भार्गव प्रेस 11/4 बाई का बाग इलाहाबाद से मुद्रित एवं क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान, नई झूँसी, इलाहाबाद 211019 उ०प्र० भारत से प्रकाशित, दूरभाष (0532) 2567243 फैक्स (0532)2567227 मोबाइल नं० 9415217278-79, 941517281, 9415235084

R.N.I. No - UPHIN/29506/24/1/2000-TC

ई-मेल: AkhandBharatSandesh@gmail.com / KriyayogaAllahabad@hotmail.com **वेबसाइट:** www.Kriyayoga-Yogisatyam.org/AkhandBharatSandesh